International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 13 Issue 4, July-August, 2025

किशोर विद्यार्थियों के अधिगम पर उनकी कुण्ठा परिस्थितियों की प्रभावशीलता का विश्लेषणात्मक अध्ययन

अनिता बाजिया[1], डॉ. शिप्रा गुप्ता[2]

[1]बी. एड. एम.एड., छात्रा, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर
[2]रीडर, बियानी गर्ल्स बी.एड. कॉलेज, जयपुर

सारांश

यह अध्ययन विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्वता (Emotional Maturity) और उनकी शैक्षिक उपलब्धि (Academic Achievement) के बीच संबंध को समझने के उद्देश्य से किया गया है। अध्ययन में 200 शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों के डेटा का विश्लेषण किया गया, जिसमें यह पाया गया कि जिन विद्यार्थियों में भावनात्मक परिपक्वता का स्तर उच्च था, उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी बेहतर थी। आंकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट हुआ कि जीवनवृत्ति परिपक्वता और शैक्षिक सफलता के बीच सकारात्मक सह–संबंध है। इस शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि भावनात्मक संतुलन, आत्म–नियंत्रण और परिपक्व सोच विद्यार्थियों की अकादमिक सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, और इसलिए विद्यालयों को छात्रों की जीवनवृत्ति परिपक्वता के विकास पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

तकनीकी शब्द :– किशोर विद्यार्थी, कुण्ठा परिस्थिति, प्रभावशीलता

प्रस्तावना

मानव, जन्तु, वनस्पति आदि सभी का एक दूसरे के बिना अस्तित्व ही संभव नहीं है। प्रकृति का हर सजीव एक–दूसरे का सहयोगी है। अपने आप में किसी को भी पूर्ण नहीं माना जा सकता है। कोई भी प्राणी चाहे मानव हो या वस्तु जन्म के बाद से मृत्यु तक अनेकों आवश्यकताओं को महसूस करता है और इन्हीं को प्राप्त करने का प्रयास मरणोपरान्त तक करता रहता है। यदि गौर से देखा जाये तो ये आवश्यकतायें ही मानव व्यवहार का कारण है। **शेफर तथा शोवेन के अनुसार,** आवश्यकता किसी ऐसे तत्व अथवा प्रकार्य का अभाव है जो जीवन की प्रक्रिया में वृद्धि की दृष्टि से अत्यन्त आवश्यक है।

नवजात शिशु अपने साथ वंशार्जित शक्तियों को लेकर आता है, जिनके द्वारा उसके व्यक्तित्व का विकास होता है। इन शक्तियों के विकास में वातावरण, परिवार, समाज, विद्यालय, संस्कृति आदि महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। लेकिन बाल्यावस्था से लेकर वृद्धावस्था तक के विकास में इनसे ही कुछ तत्व विकास के मार्ग में बाधा उत्पन्न करते है जबकि व्यक्ति अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ते रहना चाहता है। इस प्रकार इन प्रक्रियाओं के परिणामस्वरूप उसके मस्तिष्क में द्वन्द्व उतपन्न हो जाता है। अधिकतर व्यक्ति अचित ढंग से इस द्वन्द्वात्मक स्थिति का सामना करते है परन्तु कुछ ऐसे भी व्यक्ति होते है जो अपनी असफलताओं के अनुकूल नहीं हो पाते है, वे ही कुण्ठित कहलाते है। वर्तमान समय में किशोर विद्यार्थी भी इसी प्रकार की द्वन्द्वात्मक स्थिति के कारण कुण्ठित होते है।

कोई अध्यापक के व्यवहार के कारण कुण्ठित है, कोई परिवार के लोगों से परेशान है, कोई बार–बार असफलताओं से तंग है, किसी को विद्यालयी वातावरण पंसद नहीं है, कोई राजनैतिक से प्रेरित है तो कोई आर्थिक तंगी के कारण कुण्ठित है। इस प्रकार लगभग सभी विद्यार्थी किसी न किसी प्रकार से कुण्ठा का शिकार है। समाज में आज के किशोर ही कल के नागरिक है और समाज के कर्णधार है। किशोरों की स्वस्थ मानसिकता, स्वस्थ भावी समाज का स्वरूप होती है। यदि किशोरों की मानसिकता अस्वस्थ होगी तो भविष्य में समाज का अन्धकारमय होना निश्चित है।"

अध्ययन का औचित्य :–

किशोर–किशोरियों की कुण्ठा को रचनात्मक कार्य में दिशा देकर उनका विकास समाज ही में किया जा सकता है। प्रस्तुत अनंसधान में किशोर अवस्था में होने वाले कुण्ठा संबंधी व्यवहार की जांच की जायेगी तथा जांच के आधार पर किशोर–किशोरियों में पाई जाने वाले कुण्ठा स्तरों का पता लगेगा जो शैक्षिक प्रक्रिया के द्वारा आवश्यक परिवर्तन और परिवर्धन में सहयोगी होता। अतः प्रस्तुत अपुसंधिगम के निष्कर्षों के आधार पर किशोर–किशोरियों की कुण्ठा प्रतिक्रियाओं को समाज हित में व अधिगम की ओर मोड़ा जा सकेगा। व्यवसायिक दृष्टिकोण से भी इस समस्या का अपना विशेष महत्व होगा, विभिन्न आयु के किशोर–किशोरियों को विभिन्न व्यवसायिक रूचि के क्षेत्रों में मार्गदर्शन दिया जा सकेगा। प्रस्तुत अनुसंधान की सहायता से विभिन्न आयु तथा व्यवसायिक रूचियों वाले किशोर–किशोरियों की कुण्ठा संबंधित व्यक्तित्व के गुणों का ज्ञान कर व्यवसायिक मार्गदर्शन में सहयोग किया जा सकेगा।

निर्देशन की दृष्टि से देखा जाये तो प्रस्तुत समस्या बहुत ही महत्वपूर्ण हैं, क्योंकि निर्देशनकर्ता अथवा अध्यापक कुण्ठा की परिस्थितियों में पाये जाने वाले सामान्य तथा असामान्य व्यवहारों के स्वरूपों से अर्थात् कुण्ठा के प्रकारों से परिचित हो सकेगें तथा विद्यार्थियों को उसी के अनुरूप निर्देश दे सकेगें। किशोर–किशोरियों में किस प्रकार की कुण्ठा प्रतिक्रिया कम या अधिक होती है इसका ज्ञान कर असामान्य व्यवहार की अधिकता वाले किशोर–किशोरियों कैसे अधिगम कर सकेंगें।

विशेषतः परामर्शदाता व्यक्तित्व निर्देशन समस्याओं को प्रस्तुत कर समस्या को समस्या से प्राप्त निष्कर्षों की सहायता से लेकर भी किशोर–किशारियों को उचित परामर्श दे सकेगें तथा किशोर–किशोरियों को उनके उज्जवल भविष्य की ओर बढ़ने की दिशा दे सकेगें।

समाज में सर्वत्र आन्दोलनकारी वातावरण किशोरों में व्याप्त और विकसित होता है यह कुण्ठा का परिणाम है। अतः प्रस्तुत अनुसंधान से किशोर–किशोरियों की कुण्ठा भावनाओं का ज्ञान कर उनका मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है। परिणामों के आधार पर अभिभावकगण, शिक्षा अधिकारी, शिक्षक, समाज सुधारक आदि सभी लोग प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर किशोर–किशोरियों के भविष्य निर्माण में सहायक हो सकते हैं। अतः प्रस्तुत अनुसंधान कार्य किशोर–किशोरियों, अभिभावकों, शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ताओं, शिज्ञा अधिकारियों आदि सभी प्रकार के व्यक्तियों के लिए महत्वपूर्ण है।

शोध कथन –

"किशोर विद्यार्थियों के अधिगम पर उनकी कुण्ठा परिस्थितियों की प्रभावशीलता का विश्लेषणात्मक अध्ययन।"

प्रस्तुत अनुसंधान के उद्देश्य –

प्रस्तुत अनुसंधान के निम्नलिखित उद्देश्य शोधकर्ता ने निर्धारित किये है –

1. शहरी छात्रों के कुण्ठा प्राप्तांकों के स्तर का अध्ययन करना।
2. ग्रामीण छात्रों के कुण्ठा प्राप्तांकों के स्तर का अध्ययन करना।
3. शहरी छात्राओं के कुण्ठा प्राप्तांको के स्तर का अध्ययन करना।

शोध परिकल्पना –

विद्यार्थियों के अधिगम व कुण्ठा परिस्थितियों में सार्थक अंतर पाया जाता है। विद्यार्थियों के अधिगम व कुण्ठा परिस्थितियों में ऋणात्मक सम्बन्ध है।

संदर्भ साहित्य :–

चौबे, एन. वी. 2025 –चौबे ने मद्रास के उच्च निष्पति तथा निम्न निष्पति वाले छात्रों में व्यक्तित्व के तत्वों का तुलनात्मक अध्ययन पी.एफ. टेस्ट के उपयोग से किया। उनके अध्ययन के निष्कर्ष निम्न प्रकार रहे –

अन्त अतिक्रमण उच्च निष्पति वाले छात्रों में अधिक है।

अनाक्रमण का तत्व भी उच्च निष्पति वाले छात्रों में निम्न निष्पति वाले छात्रों की अपेक्षा सांख्यिकीय दृष्टि से अधिक महत्वपूर्ण पाया गया।

चौबे की यह परिकल्पना कि उच्च निष्पति वाले छात्र निम्न निष्पति वाले छात्रों की अपेक्षा कुण्ठा की स्थिति में अधिक बाह्य आक्रमण वाले होगें, सिद्ध नहीं हो सकी।

एन्जिलनो व साथी 2024 –
बालकों के निर्देशन, अग्रघर्षण और प्रतिक्रिया के प्रकार में बुद्धि का कितना महत्व है यह ज्ञात करने के लिए कैलीफोर्निया मानसिक परिपक्वता परीक्षण के आधार पर "आवेल होमा" की विविध विद्यालयों से 5 से 13 वर्ष की आयु के 101 छात्रों को जिनकी बुद्धिलब्धि 135 थी चयन किया गया। बच्चों के परीक्षा परिणाम निम्न प्रकार है –

1. छः से तेरह वर्ष की आयु के बच्चों में अन्तः अतिक्रमण और बाह्य अतिक्रमण पद के वर्गीकरण रोलन्ज्वाइग के वर्गीकरण के सदस्य ही है।
2. प्रतिभाशाली बालकों में आयु वृद्धि के साथ–साथ बाह्य अतिक्रमण तत्व शनैः शनैः अन्तः अतिक्रमण अथवा अनाक्रमण में परिवर्तन हो जाता है। इसका कारण है कि वे वांछित अथवा अवांछित क्रियाओं से अपरिचित हो जाते है और उनमें सामाजिकता की भावना का विकास हो जाता है।

अतः कहा जा सकता है कि कुण्ठा की स्थिति में प्रतिक्रिया करने में बुद्धि प्राथमिक कारण है।

शर्मा सी.एम. 2023 –
छात्र मोहन शर्मा के अधिसामान्य, सामान्य और तत्व असामान्य बच्चों में कुण्ठा प्रतिक्रिया का तुलनात्मक अध्ययन किया। जिन्होंने अपने परीक्षण के लिए अजमेर जिले के 54 शहरी क्षेत्र के बालक तथा इतनी ही बालिकाओं का कक्षा 6, 7, 8 में से समान रूप से चयन किया है। अध्ययन से प्राप्त महत्वपूर्ण परिणाम निम्न है

(अ) सामान्य व असामान्य बालकों की अपेक्षा अधिसामान्य बालकों में कुण्ठा की स्थिति करने की अधिक क्षमता है। अहम प्रतिरक्षा तत्व अधिसामान्य बालकों में अधिक है इनमें अतः अतिक्रमण की अपेक्षा बाह्य अतिक्रमण उच्च स्तर पर है।
(ब) सामान्य बालकों में कुण्ठा का सामना करने की क्षमता बाधा प्रधानता, अहम प्रतिरक्षा तथा आवश्यकता प्रदर्शन के तत्व सामान्य स्तर के है। बाह्य अतिक्रमण सामान्य से कुछ अधिक है।
(स) वर्ग समूह अनुरूप मापदण्ड अवसामान्य बालकों में अधि सामान्य व सामान्य बालकों की अपेक्षाक कम है।

श्रवण कुमार 2023 –
इन्होंने 100 बालकों के व्यक्तित्व का अध्ययन किया। जिसमें अधि सामान्य, सामान्य, अवसामान्य तीनों प्रकार के बालक सम्मिलित थे, जिनके परिणाम निम्न प्रकार से रहे –

(अ) अधिसामान्य वर्ग के बालकों में अह्म प्रतिरक्षा तत्व अधिक है और ये कुण्ठा की स्थिति का सामना करने में अधिक सक्षम है।
(ब) सामान्य बालकों में अहम प्रतिरक्षा तत्व कम होता है तथा अवसामान्य बालकों में प्रधानता की मात्रा ज्यादा होती है इनमें कुण्ठा की स्थिति का सामना करने की क्षमता नहीं होती है।
(स) सामान्य बालकों में वातावरण पर अतिक्रमण करने की प्रवृत्ति है।

पारीक, उदय नारायण 2022 –
इन्होनें रोजेन्ज्वाइग चित्रकुण्ठा विधि का भारतीयकरण किया था तथा दिल्ली विद्यालयों की 1002 विभिन्न आयु के छात्रों का परीक्षण किया। इनमें 557 बालक व 445 बालिकायें थी। प्राप्त परिणाम इस प्रकार है –

(अ) अहम प्रतिरक्षा बाह्य अतिक्रमण का तत्व आयु स्तर के अनुसार महत्वपूर्ण है।
(ब) आयु वृद्धि के साथ–साथ अन्तः अतिक्रमण व अनाक्रमण का गुण बढ़ता जाता है तथा बाह्य अतिक्रमण का तत्व कम होता जाता है।
(स) समूह मानदण्ड का औसत आयुवृद्धि के साथ बढ़ता जाता है।

शोध अन्तराल –

उपर्युक्त सम्बन्ध साहित्य के अवलोकन से यह स्पष्ट हो जाता है कि किशोर विद्यार्थियों पर देश–विदेश में अनेकों शोध कार्य हुए है। विशेष रूप से किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व तथा व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले घटकों का अध्ययन। यह अध्ययन भारत और भारत के बाहर हुए है। भारत में किशोर विद्यार्थियों के अधिगम संबंधित भी अनेकों शोध कार्य भारत में हुए है तथा अनेकों प्रभावीकृत टेस्ट भी बनाये गए है। किशोर विद्यार्थियों के कुण्ठा के संबंध में केवल भारतवर्ष में हमारी अध्ययन की दृष्टि से केवल दो ही शोध हुए है – पहला शोध कार्य डॉ. के. एस. मिश्रा तथा सत्यप्रकाश पाण्डे ने किया है इन्होनें छात्र तनाव मापनी का निर्माण किया है। दूसरा शोधकार्य राजस्थान में 1972 में हुआ। उसके बाद व उसके पहले राजस्थान में तनाव पर एक ही शोधकार्य नहीं हुआ। छात्र तनाव मापनी निर्माता डॉ. के. एस. मिश्रा तथा सत्य प्रकाश पाण्डे ने यह निष्कर्ष दिया है कि किशोर विद्यार्थियों में विद्यालय परिवेश से अधिक तनाव होता है। व्यास 1972 ने यह निष्कर्ष दिया है कि ग्रामीण छात्र शहरी छात्र की अपेक्षा तनाव ग्रस्त पाये जाते है। इस प्रकार उपर्युक्त सन्दर्भ साहित्य के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले घटकों समायोजन, द्वन्द्व, दुश्चिन्ता तथा कुण्ठाओं पर अनेकों शोधकार्य हुए है परन्तु किशोर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को सबसे अधिक प्रभावित करने वाले घटक तनाव पर केवल भारत में दो ही शोधकार्य हुए है तथा राजस्थान में केवल एक शोधकार्य ही 1972 में हुआ। इस प्रकार किशोर विद्यार्थियों के कुण्ठा का क्षेत्र शोधकार्यों से पूरी तरह वंचित रहा है और किशोर विद्यार्थियों की कुण्ठा का विकासात्मक कम में अध्ययन आज तक विश्व में कहीं भी नहीं हुआ। इस प्रकार शोधकार्य से पूरी तरह वंचित किशोर विद्यार्थियों में कुण्ठा प्रतिक्रिया कर स्थिति में शोधकर्ता को अध्ययन करने के लिए अपनी ओर प्रेरित किया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में आंकडों के संकलन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

न्यादर्श :–

अनुसंधान अध्ययन के लिए अनुसंधानकर्ता ने 200 विद्यार्थियों का चयन किया जिसमें से 100 छात्र व 100 छात्रायें है।

उपकरण

प्रस्तुत शोध में उपकरण के रूप में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है।

उच्च तथा निम्न कुण्ठित समग्र विद्यार्थियों के मध्यमान, प्रमाप विचलन, मध्यमान प्रमाप की त्रुटि तथा टी–मान सारणी

1	2	3	4	5	6
कुण्ठा	मध्यमान	प्रमाप विचलन	मध्यमान अन्तर	अन्तर की प्रमाप त्रुटि	टी–मूल्य
उच्च	48.92	3.996	12.95	1.070	12.10
निम्न	61.87	5.468	12.95	1.070	12.10

परिणाम

उपरोक्त सारणी 9 का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि शहरी तथा ग्रामीण उच्च तथा निम्न कुण्ठित छात्रों तथा छात्राओं का टी–मान 12.10 पाया गया है, जो कि .01 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 2.58 से अधिक पाया गया। अतः कहा जा सकता है कि उच्च तथा निम्न कुण्ठित छात्रों तथा छात्राओं की उपलब्धि

माध्यों के बीच जो अन्तर दिखाई दे रहा है वह सार्थक है अर्थात् निम्न कुण्ठित छात्रों तथा छात्राओं की उपलब्धि उच्च होती है।

यही स्थिति ग्राफ संख्या 1 से भी प्रदर्शित होती है।

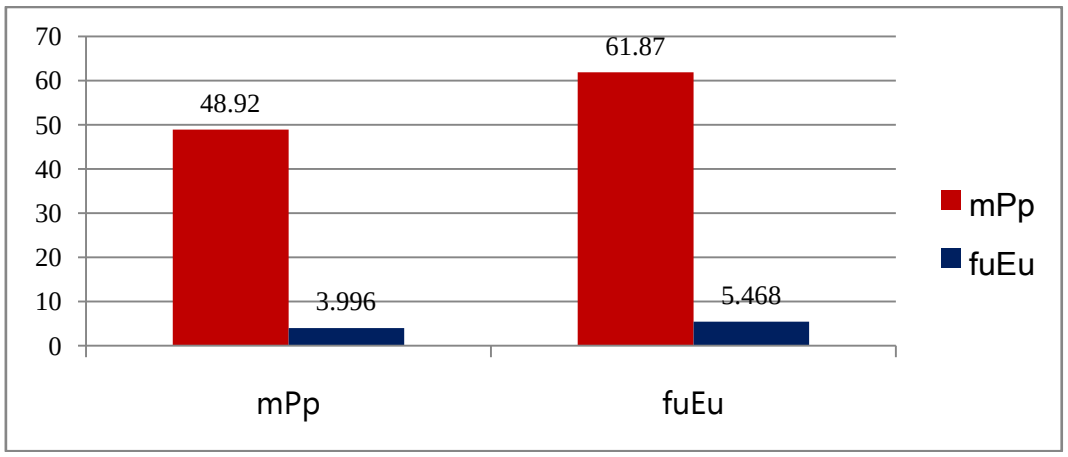

उच्च तथा निम्न कुण्ठित समग्र विद्यार्थियों के मध्यमान, प्रमाप विचलन, मध्यमान प्रमाप की त्रुटि तथा टी–मान सारणी

1	2	3	4	5	6
कुण्ठा	मध्यमान	प्रमाप विचलन	मध्यमान अन्तर	अन्तर की प्रमाप त्रुटि	टी–मूल्य
उच्च	49.05	3.42	12.85	1.374	9.352
निम्न	61.90	6.117	12.85	1.374	9.352

परिणाम

उपरोक्त सारणी 10 का अवलोकन करने से ज्ञात होता है कि शहरी तथा ग्रामीण उच्च तथा निम्न कुण्ठित छात्रों तथा छात्राओं का टी–मान 9.352 पाया गया है, जो कि .01 सार्थकता स्तर पर सारणी मान 2.55 से अधिक पाया गया। अतः कहा जा सकता है कि उच्च तथा निम्न कुण्ठित छात्रों तथा छात्राओं की उपलब्धि माध्यों के बीच जो अन्तर दिखाई दे रहा है वह सार्थक है अर्थात् निम्न कुण्ठित छात्रों तथा छात्राओं की उपलब्धि उच्च होती है।
यही स्थिति ग्राफ संख्या 2 से भी प्रदर्शित होती है।

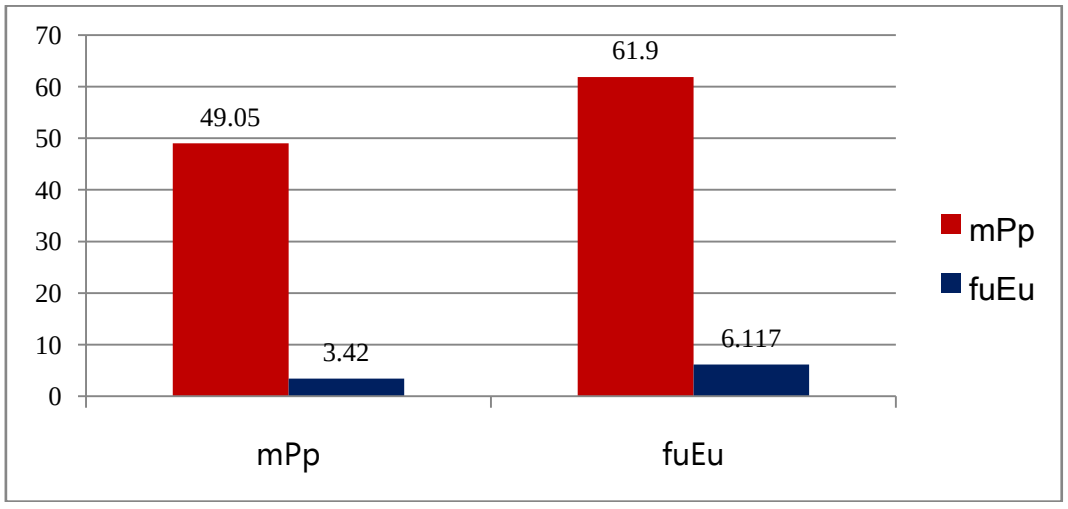

निष्कर्ष

शोध कार्य में कुण्ठा विद्यार्थियों की कुण्ठा परिस्थितियों का अध्ययन करने हेतु डॉ. एन.एस. चौहान एवं डॉ. जी. पी. तिवाड़ी द्वारा निर्मित प्रमाणीकृत वैद्य नैराश्य मापनी का प्रयोग किया गया है तथा अधिगम कार्य हेतु विद्यार्थियों के अर्द्धवार्षिक परीक्षा को आधार बनाया। दत्त संकलन सीकर जिले के शहरी ग्रामीण दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों से कुण्ठा मापनी द्वारा संकलित किये गये संकलित दत्तों के आधार पर विद्यार्थियों को उच्च व निम्न कुण्ठित स्तरों में विभक्त कर उनकी कुण्ठा परिस्थितियों का अधिगम पर प्रभावशीलता पर अध्ययन किया गया है। दत्त विश्लेषण हेतु विभिन्न सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग कर शोधकार्य के निष्कर्ष प्राप्त किये।

सामाजिक सुझाव :–

- **विद्यार्थियों हेतु उपयोगिता** – विद्यार्थियों को चाहिए कि वह अपने शरीर व स्वभाव में होने वाले परिवर्तनों से घबराये नहीं बल्कि उनका साहस के साथ समाधान करें तथा विद्यार्थियों को चाहिए कि वह योजना के अनुसार पढ़ाई करें तथा अध्यापकों द्वारा कक्षा में पढ़ाते समय ध्यान से सुने जिससे उन्हें कोर्स अधिक नहीं लगे और परीक्षा का भय भी नहीं रहे।
- **अभिभावकों हेतु उपयोगिता** –अभिभावक विद्यार्थियों की ओर से उदासीन रहते है। प्रस्तुत शोध कार्य के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि सामाजिक तथा पारिवारिक परिवेश में कई ऐसी परिस्थितियों उत्पन्न होती है जिसके लिए अभिभावक जिम्मेदार है तथा परिस्थितियां विद्यार्थियों में कुण्ठा उत्पन्न करती है।
- **शिक्षकों हेतु उपयोगिता** –प्रस्तुत शोध कार्य के निष्कर्ष से ज्ञात होता है कि किशोरों के अधिगम पर कुण्ठा का प्रभाव पड़ता है जैसे विद्यालय में अनुशासन का कठोर होना, कोर्स का अधिक होना, परीक्षा का नजदीक होना, अध्यापक की बातों को समझ न आना आदि ऐसी परिस्थितियां है जिनको ढंग से पढ़ना चाहिए कि वह कोर्स को बोझ न समझे व भयभीत न हो।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1]. आलपोर्ट बी.डब्ल्यू : पर्सनल्टी
[2]. भटनागर सुरेश : शिक्षा मनोविज्ञान
[3]. बी.डी. सिंह : शिक्षा मनोविज्ञान
[4]. बघेला हेतसिंह : अधिगम व विकास के मनो सामाजिक आधार, नई दिल्ली
[5]. सी.बी. गुडवार : मेथोलोजी ऑफ एज्यूकेशन रिसर्च
[6]. सी.ई. स्कीनर : शिक्षा मनोविज्ञान, आत्माराम एण्ड संस नई दिल्ली–1999
[7]. कालमेन जेम्स सी. : एच नांरमान साईकलोजी मार्डन लाईफ
[8]. ड्रेवर : एन इन्ट्रोडक्शन टू द साइक्लोजी ऑफ एज्यूकेशन